॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ८ नवम्बर २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - ८, नवम्बर, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा,
एम.ए., पी-एच.डी.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	भक्ति	डॉ. लता बोथरा	३६९
२.	हिन्दुओं के आराध्य भगवान् महावीर	स्व० श्री परिपूर्णानन्द वर्मा	३७२
३.	नमस्कार-माहात्म्य	पण्डित काशीनाथ जैन	३७७
४.	वैर का विपाक		३८८
५.	संकलन		३९८

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

भक्ति

डॉ. लता बोथरा

जैन धर्म अध्यात्म प्रधान है। आत्मा की निर्विकार अवस्था जैसे जैसे बढ़ती है उतना ही मानव परमात्वमय बनता है। आत्मा का चैतन्य ज्ञान भाव और क्रिया के रूप में प्रकट है या दूसरे शब्दों में ज्ञान दर्शन और चारित्र द्वारा विकसित होता है। आचार्य कुन्द कुन्द के अनुसार 'ज्ञान यद्यपि आत्मा में विद्यमान है किन्तु गुरु की भक्ति करने वाला भव्य पुरुष ही उसे प्राप्त कर सकता है।' अरिहंतो सिद्धों और आचार्यों की भक्ति से ही परम शुद्ध सम्यग् ज्ञान की प्राप्त होती है। देवचन्द्रजी महाराज भक्ति की व्याख्या करते हुए कहते है कि जिस प्रकार 'अजकुल में पालित सिंह शावक वास्तविक सिंह के दर्शन से अपने प्रसुप्त सिंहत्व को प्रकट कर लेता है उसी प्रकार साधक तीर्थकरों के गुण कीर्तन या स्तवन द्वारा स्वयं में जिनत्व को प्रकट कर लेता है।'

पुरातात्विक अन्वेषणों में मोंहन जोदड़ो और हड़प्पा से प्राप्त सीलो के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उस समय प्रतीक पूजा का अस्तित्व था जो भक्ति की अवधारणा से जुड़ी है। ऋग्वेद के स्तुति सूत्र भी भक्ति से जुड़े है यहाँ श्रद्धा और स्तुति रूप में भक्तितत्व की उपस्थिति है। उपनिषदों तथा गीता में भक्ति की सुस्थापित परम्परा देखने को मिलती है। गीता में जिन योगों का वर्णन है उनमें ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग प्रमुख है। एवं इसमें भी भक्तियोग को महत्वपूर्ण माना गया है। गीता में ज्ञान वह है जिसमें भक्ति की धारा जन्मती है और कर्म उस भक्ति की धारा की अभिव्यक्ति है। नारद सूत्र में भक्ति के तीन विभाजन किये गये है सात्विक, राजसी एवं तापसी इन तीनों के ऊपर पराभक्ति का उल्लेख है।

सगुण भक्ति काव्य में आराध्य राम और कृष्ण दोनों ही सौंदर्य के धनी चित्रित किये गये हैं। दोनों के सौंदर्य और चेष्टाओं में उपमा उत्प्रेक्षा के

रूप में प्राकृतिक बिम्ब प्रस्तुत किये गये है। जबकि जैन भक्त कवियों का आराध्य शील और वीतरागता आदि आन्तरिक भाव रहे हैं। यहाँ सांसारिक जीवन के दुगुणों का वर्णन एवं आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिये ही भक्ति पदों की रचना की गयी है।

जैन परम्परा में भक्ति श्रद्धा पर आधारित मानी गयी है उसे राग या प्रेम रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। गणधर गौतम स्वामी का भगवान् महावीर के प्रति अनुराग उनके मोंक्ष मार्ग में बाधक था इसीलिंये भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् ही उन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में श्रद्धा को ही भक्ति कहा है। उनके मतानुसार तत्व में श्रद्धा हुए बिना तत्व ज्ञान होना सम्भव नहीं है इस प्रकार जैन दर्शन में भक्ति का बीज निहित है। यहाँ भक्ति अर्हत या पंच परिमेष्टि अर्थात् अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु तथा अर्हत वाणी के प्रति है। आचार्य कुन्द कुन्द ने प्राकृत पाहुड़ में सिद्ध भक्ति, श्रुत भक्ति, चारित्र भक्ति, योग भक्ति, तथा आचार्य भक्ति के विषय में उल्लेख किया है। यति वृषभ, शिवार्यकोटि, जिनदासगणि, देवसेन, वसुनन्दी, मल्लीवेष, श्रुतसागर आदि आचार्यो ने भक्ति की विषद् व्याख्या की है। भगवान् महावीर के मुख्य गणधर गौतम स्वामी द्वारा रचित जयउ सामिय सूत्र, भद्रवाहु स्वामी रचित उवसग्गहर स्तोत्र, मानतुंग सूरि का भयहर स्तोत्र, सामन्त भद्र का स्वयंभू स्तोत्र, सिद्धसेन दिवाकर का कल्याण मन्दिर स्तोत्र मानतुंगाचार्य का भक्तामर स्तोत्र, हेमचन्द्राचार्य का वीतराग स्तोत्र भक्तिसाहित्य की अमूल्य रचनाएं हैं।

जैन धर्म में श्रद्धा और भक्ति का केन्द्र ईश्वर न होकर शुद्धात्म स्वरूप वीतराग दशा है। इस लिये यहाँ स्तुति का प्रयोजन प्रभु से कुछ पाना नहीं रहा है। स्तुति का सबसे प्राचीन रूप सूत्रकृतांक के छटे अध्ययन में वीर स्तुति है। इसमें भगवान् महावीर के गुणों का संकीर्तन है परन्तु उसमें कहीं भी कुछ प्राप्त करने की कामना नहीं की गयी है।

सामन्त भद्र अपने ग्रन्थ देवागम स्तोत्र में कहते है प्रभु, न तो मैं आपको प्रसन्न करने के लिये आपकी भक्ति या पूजा करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप वीतराग है अतः मेरी पूजा से प्रसन्न होने वाले नहीं है।

स्तुति के माध्यम से साधक उनके गुणों के प्रति अपनी श्रद्धा सजीव बना लेता है। साधक या भक्त अपने हृदय में तीर्थकरों के आदर्शों का स्मरण कर पुरुषार्थ द्वारा उनके अनुरूप बनने का प्रयत्न करने की भावना को प्रकट करता है। इस प्रकार भक्ति का अर्थ अपने में निहित परमात्व शक्ति को अभिव्यक्त करना है। भक्ति वह आत्मबोध है जिसके द्वारा सभी तीर्थंकर भी परमपद को प्राप्त हुए। भक्ति और भगवान् के बीच की दूरी को समाप्त कर स्वयं में भगवन्ता की अनुभूति करना ही भक्ति की विशेषता है। जैन दर्शन के अनुसार भक्ति की चरम निष्पति आत्मा द्वारा अपने निरावरण शुद्ध स्वरूप या परमात्म स्वरूप को प्राप्त करना है। भक्ति शब्द भज् धातु से निकला है जिसका अर्थ है सेवा करना। श्रद्धा अनुराग तथा समपर्ण के तत्व द्वारा अपने आराध्य की सेवा जो स्तुति, प्रार्थना, पूजा व अर्चना के माध्यम से बिना किसी स्वार्थ के की जाती है, वही व्यापक रूप में भक्ति है।

हिन्दुओं के आराध्य भगवान् महावीर

स्व० श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

मैं हिन्दू हूँ। ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता हूँ कि कम से कम मेरी परम्परा ने मुझे यही विश्वास दिया है। मैं हृदय से जैन धर्म का भक्त भी हूं। मुझसे प्रायः मेरे साहित्यिक तथा राजनैतिक मित्र पूछते हैं कि मैं जैन मत पर इतना आसक्त क्यों हूं, और जब उसे इतना मानता हूं तो जैनी क्यों नहीं हो जाता?

प्रश्न अच्छा है। और मेरा उत्तर भी बुरा नहीं है। मेरा विश्वास है कि बिना हिन्दू बने जैनी श्रेष्ठ जैनी बन सकता है पर बिना जैन आचार संहिता के अपनाए मैं अच्छा हिन्दू नहीं बन सकता। हमने जैन धर्म से उसका अध्यात्मवाद लेकर अपने विशाल धर्म को विशालतम बना लिया है। जैनियों ने हमसे कर्मकाण्ड लेकर अपने को कुछ बहुत आगे बढ़ाया, ऐसा मैं नहीं मानता। अच्छे हाथों में पड़कर कर्मकाण्ड हमें कल्याण की ओर ले जाता है, पर जरा-सी त्रुटि से तथा नादानी से उसमें उलझकर मनुष्य ऊपर उठने के बजाए नीचे दुबका रहता है। ठीक वैसे ही जैसे वास्तविक तंत्र-शास्त्र की गरिमा को पशु-तंत्रियों ने पतन का साधन बना दिया–चाहे हिन्दु तांत्रिक हो बौद्ध या जैनी तांत्रिक हो।

जरा परम्परा के विशाल विज्ञान की बात अलग रख दीजिए। केवल भगवान महावीर की तीन बातें अगर हम पकड़ लें तो आज का अनर्थमय संसार कितना बदल सकता है। भगवान महावीर ने कहा है कि कर्म में पूर्ण अनासक्ति हो, चित्त में राग-द्वेष लेशमात्र भी न हो और वह परमशान्त हो। परिग्रह की भावना पूर्णतः समाप्त हो जाए। आज संसार का एक मात्र रोग है परिग्रह जो जितना सोच सके, लूट सके, प्राप्त कर सके, उतना भी उसे कम प्रतीत होता है।

आज की परिग्रह की भावना से ही सब राग-द्वेष-कुकर्म-अशान्ति पैदा है, बढ़ रही है। पर हम रात-दिन घड़ी घण्टा बजाकर देवता को प्रसन्न

करने की चेष्टा करते हैं और जिन बातों से हमारे मन के भीतर बैठा देवता, प्रसन्न हो सकता है, उसके प्रति नितान्त उदासी है। तब फिर हिन्दू होते हुए भी हमें क्या मिला? क्या हम आवागमन, पूनर्जन्म संसार के रोग-व्याधि से लेश मात्र भी ऊपर उठ सके हैं।

कुर्म पुराण में कथा है कि दैत्य की सेना को जीतने वाली श्रेष्ठ सौ देवियां ईश का दर्शन करने की इच्छा से जब भगवान शंकर के सामने आई तो उनका अद्भुत रूप देखकर उन्होंने उनसे पूछा कि आप कौन हैं। शंकर ने उत्तर दिया–

अहं हि निष्क्रयः शान्तः केवलों निष्परिग्रहः।।

मै निष्क्रिय, शान्त, अद्वितीय तथा परिग्रह शून्य हूं।

पौराणिक राजा की कथा तो प्रसिद्ध है कि उसने अपने पाप का क्षय करने के लिये बारह वर्ष तक कन्द-मूल का सेवन किया तथा बारह वर्षों तक केवल वायु का भक्षण किया। तब उसके पापों का क्षय हुआ। यदि हम अपने पाप का क्षय करने के लिए केवल देवता के आशीर्वाद के भरोसे बैठे रहे तो क्या कभी उसका क्षय हो सकता है?

बड़े से बड़े महापाप तथा उच्च से उच्च आत्मायें कर्म का , संस्कार का क्षय कष्ट भोग कर कर करते हैं। रामकृष्ण परमहंस को बार-बार उनके इष्ट का साक्षात्कार होता था। पर उन्होंने स्वयं अपने शिष्यों से कहा था कि अपने संस्कार का क्षय करने के लिए ही वे गले के कैंसर के अत्यधिक पीड़ामय रोग को भोग रहे हैं। महर्षि रमण को कैंसर रोग ने वर्षों तक कष्ट देकर प्राण लिया। तपस्वी अरविन्द जब रोग-शैय्या पर पड़े थे तो उनके शिष्यों ने उनसे पूछा कि आप अपने को स्वस्थ क्यों नहीं कर लेते? उन्होंने उत्तर दिया था कि संस्कार के क्षय के लिए कष्ट सहन की तपस्या अनिवार्य है।

अहिंसा और अस्तेय इन दो बातों पर जैन धर्म बहुत बल देता है। विष्णु पुराण (३१९/२४-३३), गरुड़ पुराण (१/१०२/१-६), अग्नि पुराण (१६१/१-३१), पद्म पुराण (१/१५/३४८-३९२) तथा भागवत पुराण (७/१३/१-४६), में यति का जो धर्म बतलाया गया है, तथा कूर्म पुराण ने यति के जो धर्म गिनाये है वे भगवान् महावीर के ही अहिंसा तथा अस्तेय का प्रतिपादन करते हैं कूर्म ने यहां तक लिखा है–

स्तेयादभ्याधिकः कश्चिन्नास्त्यधर्म इति स्मृतः।
हिंसा चैषपरा दिष्टा या चात्माज्ञाननाशिका ।।

चोरी से बढ़कर कोई अधर्म नहीं है। चोरी आत्मज्ञान को नष्ट करने वाली दूसरी हिंसा कही गई है।

अमर कोश के अनुसार हिंसा का अर्थ है चौर्यादि कर्म।

हिंसा चैव न कर्तव्या वैधहिंसा तु राजसी।
ब्राह्मणेः सा न कर्तव्या यतस्ते सात्विका मताः।।

हलायुध के अनुसार धर्म का अर्थ है सुकृत, न्याय आचार सत्संग तथा अहिंसा। हम हिन्दू कैसे अपने को धर्मात्मा कह सकते हैं यदि हम हिंसक हैं, यदि हम सत्क्रम नहीं करते, यदि हमारा आचार ठीक नहीं है। यदि हम न तो सत्संग करते हैं और न हम न्यायपूर्ण जीवन बिताते हैं। हम अपने को हिन्दू कह सकते हैं पर हम धार्मिक व्यक्ति है, यह झूठ होगा।

मैं इन्ही मोटी बातों को पकड़कर कहता हूं कि बिना अच्छा जैनी हुए मैं अच्छा हिन्दू नहीं बन सकता। जैन धर्म के आचार्यों ने किसी भी धर्म का खण्डन-मण्डन करके अपने को ऊंचा साबित करने का प्रयास भी नहीं किया। मैं यहां स्याद्वाद या अनेकांतवाद पर न जाकर केवल जैन आचार्यों की निष्पक्ष विचार धारा की ओर संकेत करना चाहता हूं। आचार्य हेमचन्द्र ने स्पष्ट लिखा है कि हमने जो कुछ लिखा है वह पक्षपातवश या द्वेषभाव से नहीं। केवल श्रद्धा के कारण न आपके प्रति हे वीर, हमारा कोई पक्षपात है और न द्वेष के कारण अन्य देवताओं में अविश्वास है। किन्तु, यथार्थ रूप में आप्त की परीक्षा करके ही हमने आपका आश्रय लिया है।

न श्रद्धयैव त्वायि पक्षपातो न द्वेष मात्रादरुचिः परेषु।
यथावदाप्त व्यपरीक्षया तु त्वामेव वीर प्रभुमाश्रिताः स्मः।।

कोई झगड़े की बात तो जैन धर्म कहता भी नहीं। जैन परम्परा केवल एक धुरी केवल एक लक्ष्य है-अनन्त ज्ञान। जिसे वह प्राप्त होता है उसे सब कुछ मिल गया। आचारंग में बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा हैं–

जे एगं जाणइ, ये सब्बं जाणइ।
जे सब्ब जाणइ से एगं जाणई।।

उसी में कहा गया है—

एको भावः सर्वथा येन दृष्टः
सर्वे भावाः सर्वथा तेन दृष्टाः।
सर्वे भावाः सर्वथा येन दृष्टाः।
एको भावः सर्वथा तेन दृष्टाः।।
(प्रथम श्रुत स्कंध, तृतीया अ०, चतुर्थ उद्देश्य, सूत्र १२२)

ऐसा कौन हिन्दू हैं जो आत्म-तत्व के ज्ञान को गौण समझे? न्याय कोष के अनुसार—

शुद्धात्मतत्वविज्ञानं सांख्यमित्यभिधीयते।

सांख्यकारिका के भाष्यकार ने कहा है—

वृक्षाण छित्वा पशून हत्वा कृत्वा रूधिरकर्दम्।
यद्येवं गम्यते स्वर्ग नरके केन गम्यते।।
(२- माठर भाष्य)

आचार्य हरिभद्र ने अपने योग दृष्टि समुच्चय में जिस सुन्दरता के साथ योग के महत्व का प्रतिपादन किया है वह हरेक हिन्दू के लिए अनमोल है। योग का अर्थ प्राय ध्यान है। जैन दर्शन के अनुसार बिना ध्यान के ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता। हेमचन्द्र ने योग शास्त्र में, योगविजय सूरि ने द्वात्रिंशिका में पतंजलि, योग वासिष्ठ तथा तैत्तिरीय उपनिषद् की यौगिक क्रियायें भी दी हैं। हिन्दु ग्रन्थ योगसार ने जो लिखा है वह जैनी भी स्वीकार करेंगे। धर्म का लक्षण ही प्राणायाम, ध्यान, प्रत्याहार, धारणा तथा स्मरण (जैनी सामायिक) है। योगसार के अनुसार—

प्राणायामस्तथा ध्यानं प्रत्याहारोथ धारणा।
स्मरणं चैव योगेअस्मिन् पंच धर्माः
प्रकीर्तिताः।।

फिर जब इतना मेल है जैन तथा हिन्दू विचारधारा में तो हिन्दू जैनी से भेदभाव क्यों करे? वह मूर्खता का युग तो चला गया जब हम जैनी मंदिर में जाना भी पाप समझते थे। वह मूर्खता समाप्त हुई। पर दूसरी मूर्खता भी समाप्त होनी चाहिये कि हम एक दूसरे को भिन्न समझें। जैन धर्म नास्तिक नहीं है।

जीव की सत्ता में विश्वास करने वाला नास्तिक हो ही नहीं सकता। झगड़ा इतना ही है कि एक ही आत्मा सबमें व्याप्त है या सब आत्मा अलग अलग हैं।

जब हम निश्चय रूप से नहीं कह सकते कि ईश्वर है तो कैसे निश्चित रूप से कह दें कि आत्मा एक है।

सन्त कबीर ने कहा है–

भारी कहूं तो बहू डरूं, हल्का कहूं तो झूठ।

मैं का जानूं राम को, नैना कबहुं दीठ।।

जैन धर्म कहता है कि आशा निराशा के चक्कर में न पड़ो। निष्क्रिय निराश होकर आगे बढ़ो। यही बात तो अष्टावक्र अपनी गीता में कह गये हैं कि जो आशा के दास होते हैं वे दुनिया भर के दास हो जाते हैं।

जो आशा को दासी बना लेते हैं वे संसार के स्वामी बन जाते हैं-

आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य।

आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ।।

अस्तु मेरा तात्पर्य केवल इतना ही है कि हमने जैन धर्म को समझने की चेष्टा नहीं की इसीलिए हम अच्छे हिन्दू नहीं बन पा रहे हैं। मेरी तो यह आस्था है कि अगर भगवान् महावीर की अमर वाणी भूल से किसी के कान में पड़ जाये तो उस व्यक्ति विशेष का अवश्य ही कल्याण होगा।

जैनेतर समाज को भी आगे बढ़कर भगवान महावीर के वचनों का शुद्ध हृदय से प्रचार व प्रसार करना चाहिए, तभी जीवन सार्थक होगा।

साभार

रत्नराज ११/१७ अक्टूबर १९९८

नमस्कार–माहात्म्य

पण्डित काशीनाथ जैन

तीनों जगत के गुरु और कल्प वृक्ष रूप तथा मुक्ति पथ को दिखाने वाले श्री ऋषभदेव, स्वामी को नमस्कार हो। जो तप और ज्ञान रूपी धन के स्वामी हैं, जिनके चरण-कमलों को इन्द्र भी नमस्कार करते हैं और जो सिद्धसेन के नाथ हैं, उन श्री शान्तिनाथ स्वामी को नमस्कार हो। श्री सुब्रत स्वामी को, अनन्तनाथ को तथा अरिष्टनेमि स्वामी को नमस्कार हो। श्रीमान पार्श्वनाथ स्वामी को, महावीर स्वामी को तथा अन्यान्य समस्त जिनेश्वरों को भी नमस्कार हो। अच्छुप्ता, अम्बिका, ब्राह्मी, पद्मावती और अंगिरा आदि देवियाँ, जिनकी गणना माता में की जाती है, वे मुझे पुरुषार्थ की परम्परा प्रदान करें। पुण्य रूपी शरीर को उत्पन्न करनेवाले, पालने और शुद्ध करने वाले तथा हंस रूपी जीव को विश्राम लेने के लिये कमल समान पञ्चपरमेष्टि के नमस्कार की सदा जय हो। यह चार गति रूपी संसार यद्यपि कटु है, तथापि उसने मुझे मनुष्य जन्म और दीर्घायुष्य दिया है, इसलिये मेरे लिये तो वह मान्य ही करने योग्य है, क्योंकि इस जन्म और आयुष्य के ही आश्रय से मुझे जिनेश्वर का शासन (जैन धर्म) प्राप्त हुआ है।

श्री जिन शासन रूपी इस मनुष्य क्षेत्र में पँच मेरु समान अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय और समस्त साधुओं को नमस्कार हो। जो भव्य प्राणी नमो अरिहंत, नमो सिद्धांणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, इन पंच पदों का भावपूर्वक स्मरण करते हैं, उनके लिये भव-भ्रमण रह ही नहीं सकता। साक्षात् तीर्थंकर की वाणी के पैंतीस अतिशय सदृश इस पंचपरमेष्टि नमस्कार के पांच पद के पैंतीस अक्षर तुम्हें लक्ष्मी (मोक्ष लक्ष्मी) प्रदान करें। आदि अन्त रहित इस पंचपरमेष्टि के तीनों लोक को शुद्ध करने वाले श्लोकों द्वारा सिद्धसेन की वाणी अपने आत्मा की शुद्धि करती है।

जो लोग अरिहंत की शरण स्वीकार करते हैं—

न

—रनाथ अर्थात् राजा भी उनके वश में हो जाते हैं, देवेन्द्र उनको नमस्कार करते हैं और उन्हें सर्पादिक का भय नहीं रहता। जो भव्य प्राणी अरिहंत को पूजते हैं, उनसे

मो

—ह राजा द्रोह नहीं करता, वे निरन्तर आनन्दित रहते हैं और शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करते हैं। केवल ज्ञानी प्रदक्षिणा द्वारा उसकी

अ

—र्चना करते हैं। उन अनन्त गुण और रूप वाले अरिहंत के महात्म्य को कौन जान सकता है? राग द्वेषादिक

रि

—पु (शत्रु) जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदिक देवताओं को भी अछूता नहीं छोड़ा, उनको एक मात्र जिनेश्वर ने ही पराजित किया है। जीव और कर्म जो क्षीर नीर की भांति निरन्तर मिले रहते हैं, उनका

हं

—सकी भांति विवेचन करना जिनेश्वर भगवान् का ही काम है। स्मृ अर्थात् स्मरण करना और ध्यै अर्थात् ध्यान करना यह दोनों संयुक्ताक्षर जिस प्रकार स्वभाव से ही जुड़े हुए हैं, उसी प्रकार जीव और कर्म स्वभाव से ही जुड़े हुए हैं। उनके संयोग को अन्य महात्मा भी नहीं जान सकते। जिस प्रकार बीज और अंकुर किंवा मुर्गी और अंडे एक दूसरे से मिले जुले हैं, उसी प्रकार जीव और कर्म अनादि काल से परस्पर मिले हुए हैं। इनमें से यह पहले और यह पीछे ऐसा पूर्वापर पना सर्वथा नहीं है। जो प्राणियों की कर्म रूपी पाश से

ता

—यी अर्थात् रक्षा करते हैं, जो भव-सागर में डूबते हुए प्राणियों को तारने वाले हैं और जो तत्व ज्ञानियों के स्वामी हैं, उन जिनेश्वर का हम ध्यान करते हैं। तीन रेखा और शिर पर अनुस्वार से संयुक्त

णं

—कार अक्षर हमें यह बतलाता है, कि जिसका आत्मा ज्ञान, दर्शन और चारित्र इन तीन तत्वों से पवित्र हो जाता है, वह मोक्ष पद को प्राप्त करता है। जो तीनों सीधी रेखाओं और मस्तक पर अनुस्वार युक्त **णं** अक्षर का सदा उच्चारण करता है, वह तीनों काल और तन मन वचन की शुद्धि से सरल होकर मोक्ष का अधिकारी होता है। सात अक्षर नमो अरिहंताणं हमारे सात भयों का नाश करें।

जिस स्थान में सिद्धों के जीव निवास करते हैं, उस स्थान में—

न

—तो जन्म है, न मृत्यु है, न भय है, न पराभव है, न किसी प्रकार का क्लेश ही है।

मो

—च अर्थात् कदली (केल) के स्तम्भ की भांति सभी तरह से सार रहित कहां यह संसार और कहां उन सिद्ध जीवों का एश्वर्य, जो लोक के अग्र भाग में अवस्थिति करते हैं। जो सिद्ध गण इस लोक में

सि

—त अर्थात् उज्ज्वल धर्म को धारण करते हैं, जो शुक्ल लेश्या और शुक्ल ध्यान से युक्त हैं, जिन्होंने मोक्ष पद रूपी उज्ज्वल आश्रय को ग्रहण किया है और जिनकी कीर्ति निर्मल है, ऐसे सिद्ध हमारे लिये सिद्धिदायक हों! सिद्धाणं शब्द में

द्धा

अक्षर है, जो दा और धा, इन दोनों धातुओं से बना हुआ है। दा का तात्पर्य दान करना और धा का तात्पर्य धारण करना है। इससे सिद्ध होता है कि सिद्ध पुरुष एक ओर जहां सत्पुरुषों को स्वर्ग और मोक्ष दिलानें की शक्ति रखते हैं, वहां दूसरी ओर दुर्गति में पड़ने वाले सत्पुरुषों को धारण करने अर्थात् दुर्गति से बचाने का भी सामर्थ्य रखते हैं। अथवा यों कहिये कि सिद्ध शब्द में द्ध अक्षर है जिसमें दो अक्षरों का योग है, इसलिये वे सत्पुरुषों को योग (तन, मन और वचन का योग किंवा योग समाधि) से उत्पन्न होने वाला

मोक्ष रूपी फल दिला सकते हैं। ज्ञान और क्रिया, इन दोनों का योग बहुत ही अपूर्व हैं, क्योंकि वह स्त्री और पुरुष के योग की तरह परमात्मा से उत्पन्न होने वाले आनन्द को जन्म देता है। पुरुष के भाग्य को पंगु और उद्यम को अन्ध कहा गया है, इसलिये जिस प्रकार अन्ध और पंगु का योग होने पर गमन क्रिया की सिद्धि होती है, उसी प्रकार ज्ञान और क्रिया का योग होने पर मोक्ष पद की सिद्धि होती है। ज्ञान और चारित्र की ढाल तलवार धारण करने वाला वीर पुरुष जब समकित रूपी बख्तर धारण करता है, तब संसार संग्राम में आसानी से विजय प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार पक्षी को उसके दो पंख वाञ्छित स्थान में पहुँचाते हैं, उसी प्रकार निश्चल तप और विस्तृत शम भी मनुष्य को इच्छित स्थान में पहुँचा देते हैं। उत्सर्ग और अपवाद को तेज बैलों की उपमा दी जा सकती है। जो प्राणी शीलांग रूपी रथ पर आरूढ़ होता है, उसे वह क्षण मात्र में मोक्ष पुरी को पहुँचा देते हैं, निश्चय और व्यवहार यह दोनों सूर्य और चन्द्र के समान हैं। इन दोनों से लोक और परलोक निरन्तर प्रकाशित रहते हैं। मनकी शुद्धि आभ्यन्तर तत्व है और संयम बाह्य तत्व है। इन दोनों का योग होने पर तुरन्त मोक्ष प्राप्त होता है, इसलिये हे आत्मा! इन दोनों का तू सेवन कर। जिस प्रकार एक चक्र से रथ नहीं चल सकता, एक पंख से पक्षी नहीं उड़ सकता और जिस प्रकार दहाई में नव तक की समस्त संख्याओं का समावेश हो जाता है, उसी प्रकार अनेकान्तपक्ष रूपी समुद्र में नदियों की भांति समस्त एकान्त पक्षों का समावेश हो जाता है। परन्तु तुच्छ अर्थात् अल्प विषय वाले एकान्त पक्ष में अनेकान्त पक्ष की सम्पदाओं का समावेश नहीं हो सकता, ठीक उसी तरह जिस प्रकार दरिद्री के घर में चक्रवर्ती की सम्पदा का समावेश होना असंभव होता है। यदि किसी स्थान में एकान्त पक्ष का आभास दिखायी देता हो, तो यही समझना चाहिये कि वह अनेकान्त पक्ष से ही उत्पन्न हुआ है; क्यों कि तेल, बाती और पात्र आदि का योग होने पर ही दीपक उत्पन्न होता है। सत्य और असत्य, नित्य और अनित्य, धर्म और अधर्म-सभी गुण जोड़े के रूप में दिखलायी देते हैं, जिससे सत्पुरुषों की कार्य सिद्धि सूचित होती है। इसलिये जिन भव्य जीवों को सिद्धि पद की

इच्छा हो, उन्हें बुद्धि के आठ गुण रूपी मन्त्र का जप करना चाहिये और एकान्त पक्ष ग्रहण करने का दुराग्रह छोड़कर तत्व के ही लिये यत्न करना चाहिये। तीन रेखा और शिर पर अनुस्वार से युक्त

णं

कार हमें यह सूचित करता है कि ज्ञान , दर्शन और चारित्र इन तीन रत्नों से सम्पन्न आत्मा शून्य स्वभाव अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है। शुभ और अशुभ सभी कर्मों का क्षय हो जाने पर आत्मा का जो चैतन्य स्वरूप मोक्ष स्थान में भासित होता है, वहीं स्वभाव की शून्यता कहलाती है। औदारिकादिक पंच शरीरों का नाश करने वाले और मोक्ष रूपी पांचवीं गती देनेवाले नमो सिद्धधाणं यह पंचाक्षर पंचत्व के प्रपञ्च अर्थात् जन्म, जरा, मृत्यु आदि से तुम्हारी रक्षा करें।

जो लोग आचार्य के चरण-कमल का आश्रय ग्रहण करते हैं, उनमें तमोगुण

न

—हीं होता। उनमें बाह्य मुखी सत्वगुण भी नहीं होता, न मन वचन और तनका कोई कष्ट ही होता है। यह बड़े ही आश्चर्य की बात कि

मो

—ह पास में फँसे हुए प्राणियों को भी आचार्य भगवान् केशी नामक गणधर की भांति मोह से छुड़ा देते हैं। जिसके

आ

—चार बहुत ही मनोहर होते हैं, जिसमें मोक्ष से संगम करानेवाला आगम अर्थात् श्रुतज्ञान पाया जाता है, और जिसमें घाटे के सिवा केवल आमद के ही लक्षण होते हैं, उन पण्डितों को आचार्य करते हैं।

य

—थार्थ तत्व की प्ररूपणा करनेवाले, यम नियमादिक में यत्नशील रहनेवाले और अपने आत्मरूपी यज्ञ का ही यजन-पूजन करनेवाले आचार्य भगवान् निरन्तर हमारे शरण स्थान हों। जो

रि

—पु अर्थात् शत्रु और मित्र में, सुख और दुःख में, दुर्जन और सज्जन में, मोक्ष और संसार में, धनी और निर्धन में समान दृष्टि रखता है, उसी को यतिओं का स्वामी अर्थात् आचार्य (श्री पूज्य) कहते हैं।

या

—अर्थात जो भी निर्मल सिद्धियाँ हैं और जो भी उज्ज्वल लब्धियां हैं, वे सभी उसी तरह आचार्य भगवान् को वरण करती हैं, जिस प्रकार कमल को भ्रमर वरण करते हैं। तीन रेखा और अनुस्वार से युक्त

णं

—कार यहां हमें यह सूचित करता है कि जो तीनों वर्ग में समदृष्टि होते हैं, वे सत्पुरुषों में शिरोमणि कहलाने योग्य होते हैं। धर्म अर्थ और काम, अथवा शत्रु मित्र और उदासीन, अथवा राग द्वेष और मोह–यह त्रिवर्ग कहलाते हैं। इस तीसरे पद के साथ अक्षर (नमो आयरियाणं) जो सात* तत्व रूपी कमल-वन को विकसित करने में सूर्य-किरण के समान हैं, तुम्हारी सात नरक पृथ्वी रूपी दुर्गति का नाश करें।

जो ज्ञानी पुरुष उपाध्याय का ग्रहण करता है, वह पाखण्डियों द्वारा खण्डित अर्थात् पराजित

न

—हीं होता। वह न तो मन, वचन और काया के कष्ट से पीड़ित ही होता है, न क्रोधादिक कषायों द्वारा दण्डित ही होता है। सिद्ध भगवान् का कथन है, कि जो मनुष्य उपाध्याय की सेवा करता है, उसके शरीर में अर्थात् माता लक्ष्मी, उमा अर्थात् कीर्ति, ह्री, धृति और ब्राह्मी आदि देवियाँ वास करती हैं। जो मूर्तिमान

उ

—दय है, जो समकित दृष्टिवालों के लिये उत्सव और बुद्धिमानों के लिये उत्साह रूप है, उसे उपाध्याय कहते हैं। जिसने

---

* नव तत्वों में से पुण्य और पाप का आश्रव तत्व में समावेश होने पर सात ही तत्व शेष रहते हैं।

व

—चन, शरीर और वय में वृद्धि प्राप्त की है, जो हिंसा की बातों से भी रहित है, जो वेद (आगम) विद्या को अपने वश में रखता है, अर्थात् जो आगमों में पारंगत है, उस उपाध्याय की सेवा करना चाहिये। एकान्त अनित्य पक्ष और एकान्त नित्य पक्ष पर विजय प्राप्त करने के कारण उपाध्याय की कीर्ति रूपी भँभासे तो

ज्झा

—त्कार शब्द निकलता है, उससे दसों दिशाएँ व्याप्त हो रही हैं।

या

अर्थात् शिष्यों को जो सप्त नयमें कुशलता प्राप्त होती है, जो अन्य के आगम-शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है और जो द्वादशांगी रूप सूत्र की प्राप्ति होती है, वह सब बिना उपाध्याय के क्या कभी संभव हैं? तीन रेखा और अनुस्वार से युक्त

णं

—कार हमें यहाँ यह सूचित करता है कि विनय, श्रुत और शील आदि गुण मोक्ष प्राप्त के लिये आवश्यक हैं। इस चतुर्थ पद के सात अक्षर **नमो उवज्झायाणं,** जो सात रजु प्रमाण उर्ध्वलोक के मार्ग को प्रकाशित करने में दीपक के समान है, हमारे सात व्यसनों का नाश करें।

—जो मनुष्य यति-साधु की सेवा करता है, वह कभी व्याधियों से पीड़ित

न

—हीं होता, उसे कभी दरिद्रता नहीं प्राप्त होती, इष्ट वस्तु का वियोग नहीं होता, न उसके मन में कभी उद्वेग ही प्राप्त होता है। साधु के ध्यान रूपी अमृत रसके अञ्जन से जिसके मन रूपी नेत्र आंजे रहते हैं उस मनुष्य के लिये चार प्रकार का दु:ख रूपी अन्धकार अन्धना का कारण नहीं बनता। जो मुनि समस्त संगों के

मो

—क्ता अर्थात् त्यागी बन जाते हैं, जिन्हें रागादिक अभ्यन्तर शत्रुओं का नाश करने में सफलता मिल जाती है, और जो मोक्ष लक्ष्मी की कृपा के

अधिकार बन जाते हैं, वे सदा प्रसन्न रहते हैं। जो

लो

—भ रूपी वृक्ष को उखाड़ फेकने में नदी के वेग समान हैं, जिनका चरित्र उत्तम है और जिन्होंने संसार में उत्तमता प्राप्त की है, ऐसे तीसरे स्थानवाले साधु हमारे पाप का नाश करें। पूज्य साधुगण मूल गुण और उत्तर गुणके समूह रूपी उद्यान में मन रूपी मृग के साथ

ए

—कान्त में इच्छानुसार क्रीड़ा किया करते हैं। श्रुत के पारगामी संविरन साधु की इस एकान्त प्रियता की तुलना दक्षिणावर्त शंख सिद्ध सरिता के जल से की जा सकती है। जो साधु एकान्त का सेवन करता है-एकान्त स्थान में अकेला रहता है, वह कभी क्रोध से व्याकुल नहीं होता। न उसे कभी मान ही होता है, न वह कपट करता है, न उसे कभी लोभ ही सताता है। श्रीनमि आदि राजर्षियों ने एकत्व तत्वका वहन करने पर ही मोक्ष प्राप्त किया है।

स

—ब प्रकार से जीवादिक तत्वों को जाननेवाले और निरन्तर चित्त में संवेग को धारण करने वाले साधुओं का अकेलापन निःसन्देह समता रूपी अमृत की धार के समान है।

व्व

—अक्षर की भांति जो दो साधु एक साथ रहते हैं, वे यदि इन्द्रियों को वश करने वाले होते हैं, तो स्वार्थ सिद्ध कर सकते हैं। व्व-इस संज्ञा से ज्ञात होता है कि तन, मन और वचन के योग से इन्द्रियों को वश में करने वाले साधु, दो जन साथ रहकर भी अपना कल्याण साधन कर सकते हैं। यदि इन्द्रियों को वश में रखने वाले हों, तो दो मनुष्यों का साथ रहना भी बुरा नहीं है और वह भी अकेला ही मनुष्य भी हजार मनुष्यों के समान है। नेत्र दो होने पर भी जिस तरह संकोच विस्तार, निद्रा और जागृति आदि में वे समान धर्म का ही पालन करते हैं, उसी तरह समान धर्मवाले दो मनुष्य भी समकित को प्राप्त कर सकते हैं। इसके विपरीत एक मनुष्य यदि उसकी इन्द्रियाँ वश में नहीं होती, तो वह विडम्बना का स्थान बन जाता है, वह स्वार्थ की साधना

नहीं कर पाता और लोक या लोकोत्तर में विश्वास नहीं जमा पाता। भावना ध्यान द्वारा निश्चित तत्व में, जिसका आत्मा लीन हो जाता है, ऐसे ममता रहित साधु यदि लाख मनुष्यों के बीच में रहते हैं, तब भी उनका अकेला पन नष्ट नहीं होता। जिनका हृदय

सा

—म्य रूपी अमृत तरंगों से भरा हुआ है, जो सार असार का विवेचन करने की क्षमता रखते हैं और जो भाव सिद्ध हैं, ऐसे अनेक साधु यदि इकट्ठे होकर एक साथ भी रहें, तो उससे कोई हानि नहीं हो सकती। मनकी स्थिरता के कारण जो मुनि निश्चल हो जाते हैं और जो वृक्षादिक की भांति किसी भी प्रकार की क्रिया नहीं करते, उनका एकत्र वास भावना रूपी लताओं के मण्डप समान हो जाता है। चित्रांकित सैन्य की भांति तन, मन और वचन से विकार रहित मुनि यदि एक साथ इकट्ठे भी रहते हैं, तो उनमें कोई बुराई नहीं पैदा होती। जिस प्रकार अनेक निर्जीव पदार्थों को एकत्र करने पर भी उनमें चैतन्य नहीं उत्पन्न होता, जिस प्रकार अनेक कायर पुरुषों को एकत्र करने पर भी उनमें वीरता नहीं उत्पन्न होती, उसी प्रकार यदि उपरोक्त प्रकार के अनेक मुनि इकट्ठे भी हो जाते हैं, तो उनमें कोई क्लेश नहीं उत्पन्न होता। जो मूढ़ यह समझते हैं कि पांच छः साधुओं के एक साथ रहने से भी बुराई उत्पन्न हो सकती है, वे एक स्थान में रहने वाले अगणित सिद्धों के साथ रहने की इच्छा भी कैसे कर सकते हैं? ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूपी तीन महा रत्नों को धारण करनेवाले साधु को रागादिक उपद्रवों से भरे हुए मार्ग पर अकेले चलने की सलाह नहीं दी जा सकती। इसमें उसके लिये खतरा रहता हैं। फिर, दूसरी बात यह भी है, कि अकेला मनुष्य सुकृत का विकास नहीं कर सकता, उसके इच्छित प्रयोजन की सिद्धि नहीं हो सकती, वह वाञ्छित अर्थ नहीं प्राप्त कर सकता, न वह मोक्ष का अधिकारी ही हो सकता है। जिस प्रकार श्लेष्म रोगी को मिश्री नहीं दी जा सकती, ज्वराक्रान्त को घृत युक्त भोजन नहीं दिया जा सकता, उसी प्रकार अगीतार्थ मुनि का अकेला रहना उचित नहीं कहा जा सकता। अकेला मनुष्य प्रायः चोर सा प्रतीत होता है, दो मनुष्य साथ होने से उन पर भी धूर्त होने का सन्देह किया जा सकता है, तीन मनुष्य साथ होने पर वे विश्वासपात्र समझे जा

सकते हैं और बहुत से मनुष्य एक साथ होने पर वे राजा की भांति शोभा देते हैं। तीर्थंकर और प्रत्येक बुद्ध आदि अकेले ही विचरण करते हैं, इस तरह के उदाहरण देकर अन्यान्य मुनियों का अकेले विचरण करना ठीक नहीं, क्यों कि ज्ञान चक्षुवालों के साथ चर्म-चक्षुवालों की स्पर्धा सर्वथा अनुचित है। इस चार गति रूपी संसार में प्राणी मात्र भ्रमण करते हैं। पुण्य और पाप सदा उनके साथ ही लगे रहते हैं, इसलिये भी उनका अकेला रहना ठीक नहीं। जिसके हृदय में आहार-संज्ञा, भय-संज्ञा आदि संज्ञाएँ, कृष्ण लेश्या आदि दुष्ट लेश्याएँ और राज कथादिक विकथाएँ, चपलता उत्पन्न करती हों, वह अकेला कैसे रह सकता है? जिसे अविरति रूपी दुष्टप्रिया शाकिनी की भांति निगल जाने की सदा चेष्टा करती हो, उसे अकेले रहने की सलाह कैसे दी जा सकती है? असन्तुष्ट इन्द्रियों का परिवार जिसके शरीर को पञ्चाग्नि की भांति निःशंक भाव से जलाया करता है, क्या उसका अकेला रहना उचित है? जिस प्रकार दूध से दूध मिलने पर, पानी से पानी मिलने पर वे एकता प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार मुनि भी मुनि से मिल कर एकता को प्राप्त करते हैं। ऐसी अवस्था में मुनि के साथ रहने पर भी मुनि की एकता नष्ट नहीं होती और वह अकेला ही माना जाता है। क्षण मात्र के लिये भी कषाय जिसका पीछा नहीं छोड़ते, वह अकेले पन का सुख कैसे उपभोग कर सकता है? कुपुत्र की भांति अपने ही तन, मन और वचन से उत्पन्न व्यापार निरन्तर जिसके नाश में जुटे रहते हैं, वह अकेलेपन के सुख की आशा कैसे रख सकता है? बुरे पड़ोसी की तरह प्रमाद, मिथ्यात्व और रागादिक जिसके पीछे पड़े हों, उसके लिये अकेलेपन का सुख कैसा? जो मनुष्य के समूह में होने पर भी अकेला ही समझना चाहिये, ठीक उसी तरह, जिस तरह मनुष्यों से पूर्ण नगर में रहने वाला परदेशी मनुष्य अकेला ही कहलाता है। जो मुनि इन संज्ञा, कषाय और इन्द्रियों के उपद्रवों से घिरा हुा हो, वह यदि जंगल में अकेला भी रहता हो, तो उसका अकेलापन व्यर्थ है। जार, धूर्त, गुप्तचर और चोर आदि क्या अकेले नहीं रहते? कहने का तात्पर्य यह है कि अकेलापन वही अच्छा है, जिसका फल अच्छा हो। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि जिनागम में किसी भी कार्य के लिये खास विधि या निषेध नहीं है। इस लिये श्रेष्ट मुनि फलाफल पर भलि भांति विचार करने के बाद ही किसी काम में प्रवृत होते हैं, यानि कोई कार्य करते हैं। साधु पुरुष न तो

हू

—अर्थात् कोई होम करते हैं, न दान देते हैं, न तप करते हैं, न जप करते हैं। वे तो मात्र क्रिया रहित होकर मोक्ष पद की साधना करते हैं, साधुगण हु हु नामक गन्धर्व के गान सुनने में, अमृत रसका आस्वाद लेने में, मन्दार पुष्पों की गन्ध लेने में, देवशय्या का सुखद स्पर्श करने में वा देवांनाओं का रूप देखने में मुग्ध नहीं होते। तब क्या वे वृक्ष हैं? बालक हैं या पशु हैं? नहीं, वे वृक्ष, बालक किंवा पशु नहीं हैं। वे निरंजन अर्थात् कर्म लेप रहित मुनि हैं, इसीलिये इन सब कामों में लिप्त नहीं होते। तीन रेखा और अनुस्वार युक्त

णं

—कार यहां हमें यह सूचित करता है कि जो महामुनि सदाचार का आचरण करते हैं, वे तीन गुप्ति के आचरण में रेखा प्राप्त कर लेते हैं। नय-भेद, जीव-रक्षा और अमृत-कुण्ड जैसी आकृति वाले यह नव अक्षर (नमो लोए सव्व साहुणं) हमारे हृदय में नित्य नये धार्मिक भावों को उत्पन्न करें।

क्रमशः

वैर का विपाक

गुणसेन अपने माता-पिता का जितना अत्यन्त लाड़ता पुत्र था, उतना ही वह प्रजा का भी लाड़ला युवराज था। संयम और विनय इन दोनों ने उसको जन्म से ही वर लिया था। स्वच्छंदी मित्रों, खुशामदी दरबारियों और राज्य-प्रपंचियों की छाया से वह सदा सौ कोस दूर रहता था। परन्तु उसमें मात्र एक निर्बलता थी। याने वह कुछ क्रीड़ाप्रिय था। कौतुक और विनोद में उसे रस आता था।

जीवन में आनन्द विनोद का स्थान है और वह रहना भी चाहिये। कितनों ही का तो यहां तक कहना है कि आनन्द में से ही इस जगत की उत्पत्ति हुई है और अन्त में यह आनन्द में ही विलीन भी होने वाला है। बात इतनी सी ही है कि यह आनन्द निर्दोष होना चाहिए–किसी को पीड़ा उत्पन्न करने वाला, किसी की वैरवृत्ति को उसकाने वाला यह आनन्द नहीं होना चाहिये।

एक दिन गुणसेन अपनी क्रीड़ा की यह मर्यादा भूल गया। अग्निशर्मा नामक ब्राह्मण युवक को देखते ही उसका कुतूहल अतिशय उकसा गया। अग्निशर्मा मनुष्य है–मिट्टी का पुतला नहीं है, इसके भी हर्ष-शोक अथवा स्वमान, प्रतिष्ठा जैसा हो सकता है यह बात गुणसेन के लक्ष्य के बाहर ही चली गई।

अग्निशर्मा को देखते ही गुणसेन उसकी ओर आकर्षित हुई इसका एक विशिष्ट कारण था। वह अत्यन्त बिडरूप था। परन्तु उसमें अग्निशर्मा का तो दोष नहीं था। अन्य दृष्टि से देखने पर अग्निशर्मा एक प्रसिद्ध अग्निहोत्री-कर्मकांडी ब्राह्मण का पुत्र था। पूर्व के किन्ही कर्मों के कारण उसकी देह को ऐसा आकार प्राप्त हो गया था कि पशुदेह अथवा मानवदेह का उसमें विचित्र संमिश्रण देख, किसी को भी कुतूहल हुए बिना रहीं नहीं सकता था।

त्रिकोण के आकार जैसे उसके मस्तक में पीली पीली दो आंखे तक-तक करती थीं। नाक तो उसका ऐसा चपटा था कि मूल से विधाता ने वहां थापी मार कर नसक़ोरों को अंडे उतार दिये हो ऐसा लगता था। कान के स्थान पर मात्र दो शून्य ही थे। उसके दांत देखने पर दिन में भी विकराल लगते थे। हाथ बांके और छोटे थे। पेट मोटा और गोले जैसा था और गला बिलकुल ही संकड़ा था।

सुतार अथवा कुम्हार भी इससे अच्छी, प्रमाणयुक्त लकड़ी अथवा मिट्टी की आकृति बना सकता था। ऐसे अग्निशर्मा को देख कर पहले ही दिन गुणसेन खड़खड़ाट हंस पड़ा। फिर जब उसकी माता से अग्निशर्मा ने अणघड़ नाच-नाच कर बताया तो गुणसेन बिलकुल पागल जैसा हो गया।

अग्निशर्मा को अपने सामने देखकर कोई हंसे अथवा उसका मजाक उड़ाए, यह अच्छा नहीं लगता था। परन्तु धीरे धीरे वह इस आफत से इतना अभ्यस्त हो गया था कि अब वह जरा भी चिढ़ता नहीं था। जहां तहां जाता जिस जिस मार्ग से वह निकलता वहां उसकी खुले दिल से हंसी-मश्करी की जाती थी। अग्निशर्मा वह सब शांति से सह लेता था। शांति से इसलिए कि उसके प्रतिकार का उसके पास अन्य कोई उपचार था ही नहीं। इसके पिता यज्ञदत्त को भी यह बहुत बुरा लगता था। परन्तु यह राज्याश्रित ब्राह्मण अब शाप देने की अथवा अन्य किसी भी शक्ति रहित था। लोग भी सब यह बात जानते थे।

पहले कुछ दिनों तक तो अग्निशर्मा को नचा-कर खिजाखिजा कर दौड़ाभगा कर गुणसेन और उसके साथी विनोद प्राप्त करते रहे। परन्तु यह विनोद जब पुराना पड़ गया और उन्हें आनन्द नहीं देने लगा तो अग्निशर्मा को दूसरी किस रीति से हैरान किया जाए इसकी तदबीरें खोजी जीने लगीं।

एक ने कहा: इस शर्मा को गधे पर बिठा गांव में घुमाया जाए तो बड़ा ही मजा रहे। नगर के लोग बिचारे ऐसा खेल कहां और कब देख पा सकते हैं?

दूसरे ने उसमें बढ़ाते हुए इस प्रकार कहा: फिर तो शर्मा को शुंभारना भी होगा। सिर मुंडा हुआ है इसलिये यह कष्ट तो नहीं करना होगा परन्तु गले में एक पुष्पहार डालने की जिम्मेदारी मैं उठाऊंगा। वह यद्यपि मात्र

पुष्पहार ही बोला था, परन्तु उसके मनमें पुरानी पगरखियों के हार की ही बात थी, यह सब कोई सहज में ही समझ गए थे।

फिर तो जैसे जैसे श्रृंगार की बात की चर्चा बढ़ी, वैसे ही सब ने अग्निशर्मा के रूप-सौन्दर्य को शोभा दे, ऐसी ऐसी बातें कहीं। अन्त में यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हो गया। गुणसेन ने भी इसमें खूब ही उत्साह और उल्लास दिखाया।

अग्निशर्मा के जुलूस में बालकों के टोले के टोले सम्मिलित हो गए। गधे की सवारी के साथ टूटे सूप का एक छत्र और फुटा ढोल भी हाजिर हो गया। यह जुलूस सारे नगर में घूमा। शर्मा को यह बात रंच मात्र भी नहीं रूचि थी परन्तु जिसके राज्य में रहना हो और उस राज्य का युवराज ही जहां सम्मति दे रहा हो यही नहीं अपितु आगे बढ़-बढ़कर भाग भी इसमें लेता हो वहां एक गरीब ब्राह्मण कर भी क्या सकता था?

फिर यज्ञदत्त एक सामान्य पुरोहित ही तो था। वह अपने पुत्र की इस प्रकार विडंबना होते देखकर बहुत ही गहरा निःश्वास फैंका करता था। अग्निशर्मा भी युवराज की इस क्रीड़ातिशयता देखते-देखते थक गया था। नगर छोड़ देने के सिवा उसके लिए दूसरा कोई भी मार्ग रह नहीं गया था।

एक दिन जब युवराज ने अग्निशर्मा की खोज कराई तो उसे पता चला कि वह उसके राज्य की सीमा का त्याग कर कहीं चला गया है।

अपनी दैनिक उत्कटमौज का एक खिलौना खो गया है, यह जानकर गुणसेन बहुत ही निराश हुआ। अग्निशर्मा को खोजकर निकाला जा सके अब ऐसा संभव नहीं था। यदि वह एक बार भी हाथ में आ जाये तो पशु की भांति उसे रस्सी से बांध रखने का बाहर बिलकुल ही नहीं जाने देने का उसने निश्चय कर लिया था। परन्तु अग्निशर्मा तो जहां तक उसकी देह रूपी खोली में जीव हो वहां तक इस नगर में लौट नहीं आने का दृढ़ विचार करके ही गया था। अतः उसको गुणसेन कहीं भी खोज नहीं निकाल पाया।

एक महीने के पश्चात् अग्निशर्मा एक रमणीय तपोवन में पैर रखने में भाग्यशाली हुआ। यहां कोई राजा, राजकुमार अथवा श्रेष्ठिकुमार उसे सताने अथवा छेड़ने वाला नहीं था। चंपक, नकुल, अशोक और नाग तथा

पुन्नाग वृक्षों से सारा तपोवन छाया हुआ था। छोटी नदियों और झरणों का निर्मल बहता जल कलरव करता हुआ, तपस्वियों को निर्दोष आनन्द देता था। तपस्वियों में से कितने ही होमादि में रचे पचे हुए थे क्योंकि प्रभु को प्रसन्न करने का यही एक सनातन और सर्वोत्तम राजमार्ग है वे ऐसा मानते थे। दूसरे कितने ही विविध और कठोर तपश्चर्या से नया प्रकाश प्राप्त करने का परिश्रम कर रहे थे। इस तपोवन के कुलपति आर्जव कौडिन्य तापसों के तीर्थ रूप थे।

भारतवर्ष में एक समय ऐसे तापसकुल स्थान स्थान पर व्याप्त थे। तप बिना सिद्धि नहीं यह प्राचीन भारतीय संस्कृति का शाश्वत और सनातन सूत्र है। इस संसार के संक्लेश से बचना हो तो तप करो – आत्मा की अनंत शक्ति का द्वारा खोल डालना हो तो तप करो मानवजाति के सुख-शांति के लिए भी तप के सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। इतिहास को उज्ज्वल करने वाले महापुरुषों ने कैसी-कैसी उग्र तपश्चर्या की थी और तप के प्रताप से उन्होंने कैसी-कैसी अद्‌भुत सिद्धियां प्राप्त की थी और उसी तप के तेज से आज भी आर्यदेश कितना उज्ज्वल और अस्मितावान रह सका है, वह हम सब जानते हैं।

तपोवन में तापस और ऋषि अनेक प्रकार की तपश्चर्या करते देह का दमन करते थे। ये सभी तपस्याएं सिद्धिदाता होती थी ऐसा तो नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि कितनी ही तो मात्र कष्टक्रिया रूप ही परिणमती थी। तप के साथ संतः शुद्धि का मेल बैठना चाहिये, यह बात बहुत कम तपस्वी समझते थे। पंचाग्नि का ताप सहना-शीत और वर्षा के उपद्रव खुली छाती उठाना, एक हाथ ऊंचा रख अथवा एक पैर पर स्थिर हो इंद्र का आसन डोलायमान करने में ही तापसों की कृतकृत्यता मानी जाती थी।

तपोवन में अन्य दुःखी और उदासी जनों को भी स्थान मिल जाता था। बस अग्नि शर्मा को यह स्थान रुच गया। वह संसारी होते हुए भी संसारी ही तो था। संसार में एक घर के सिवा, माता-पिता के सिवा दूसरा कोई भी आश्रयस्थान उसको नहीं था। जहां जहां वह जाता, वहीं वह उपहास अथवा कुतूहल का ही विषय बनता था। उसका दैहिक बनावट ही ऐसी

बिचित्र थी। परन्तु उसमें वह निरुपाय था। लोगों की हंसी-मश्करी से वह एकदम थक गया था। इस तपोवन में अधिकांशतः संयमी पुरुष ही रहते थे। कोई किसी का कौतुक करे ऐसा उन्हें कोई अवकाश ही नहीं था।

आचार्य आर्जव कौंडिन्य ने इस नए अतिथि का स्वागत किया। इसने अग्निशर्मा के खिन्न मुख पर विषाद की गाढ़ कालिमा छाई हुई देख ली, इतना ही नहीं अपितु यह भी जान लिया कि इस मनुष्य को आज तक ममता से किसी ने भी नहीं अपनाया है। निःसंगता उसके अंग अंग में से झर रही थी। बहुत दिवसों का भूखा मनुष्य जैसा दीखता है वैसा ही विकराल यह स्नेह-ममता से वंचित रहा हुआ अतिथि उनको कठिन पत्थर की मूर्ति जैसा लगा।

बेटा, बहुत दिवसों के पश्चात् भी तूं आया तो सही। आचार्य ने ऐसे मीठे स्वरों से उसे तुरत ही संबोधित किया। उसने उसकी सब बातचीत सुनी। फिर इस आश्रय में एक छोटी सी झोंपड़ी बना रहने की अनुमति उसने उसे दे दी।

अग्निशर्मा ने सच्चे मन से गुरुजी की सेवा करनी प्रारम्भ कर दी। आचार्य कौडिन्य को सच्ची सेवा करनेवाले शिष्यों की कोई कमी नहीं थी। परन्तु अग्निशर्मा ने अपने को उन सब से बिलकुल अनोखा ही बता दिया। जहां तक संभव था वह गुरु से दूर नहीं रहता था, छाया के जैसे उनका अनुसरण ही सदा वह करता करता था। आचार्य स्वयम् भी तपस्वी हो, अपने पास आने जाने वाले प्रत्येक को वे आहार तथा आमोद-प्रमोद से दूर रहने का ही उपदेश देते थे। संसार में विविध जिव्हारस मानवों को पछाड़ते हैं, आमोद-प्रमोद उन्हें संघी-मीत बना देते हैं, इसके सिवाय दूसरा कुछ भी कहने का उनके पास नहीं था। शास्त्र की अनेक बातों का यही निचोड़ हो ऐसा ही सुननेवाले को लगता था।

थोड़े से ही परिचय के पश्चात् अग्निशर्मा के जीवन में एक संस्कारबीज अंकुरित हो गया। उसे विश्वास हो गया कि प्राणीमात्र अपने कर्मफल भोगता है। कर्म खपाने के लिये तप जैसा दूसरा कोई भी साधन नहीं है।

दुःख गर्भित वैराग्य की मिट्टी में से अग्निशर्मा ने एक कल्पवृक्ष उगाने की साधना प्रारम्भ कर दी। अन्य तापसों की भांति छोटी साधना के

पुष्पवृक्ष रोपने का उसका मन ही नहीं हुआ। रोग का उपाय मिल गया है तो उसे पूरा-पूरा आजमा लेने की उसने अपने मन में पक्की गांठ बांध ली। अन्न अथवा पानी बिना दिन पर दिन बिताने, शीत-ऊष्णता को एक समान मानने की अग्निशर्मा के सामने कोई कठिन बात नहीं थी। आज तक का सारा ही जीवन उसने लगभग ऐसी कष्ट परम्परा में ही बिताया था।

कालान्तर में अग्निशर्मा की उग्र तपश्चर्या ने इस तापस-आश्रम को प्रकाशमान कर दिया। उनकी तपश्चर्या की ख्याति देश भर में गूंज उठी। अंत में इस अग्निशर्मा ने एक एक महीने का उपवास करना प्रारम्भ किया। उपवास के पारण के दिन भिक्षा के लिये मात्र एक ही गृहस्थ के घर जाना और वहां आहार न मिले तो आहार बिना ही चला लेना एवं दूसरे ही दिन से फिर से महीने का उपवास आरंभ कर देना यही उसका नियम था।

अग्निशर्मा के तप की बात सुनकर लोग आश्चर्य से दिग्मूढ़ बन गए थे। उग्र तप की यह पराकाष्ठा ही कही जा सकती है। महीने भर के उपवास के अन्त में मात्र एक घर से ही भिक्षा लेने के आग्रह ने लोगों को चिंता में डाल दिया था।

उसके विरूप देह की बात लोग भूल गए। अग्निशर्मा को देखते ही एक समय जो हंसी-मश्करी करते थे वे ही अब उन्हें देखते ही हाथ जोड़ मस्तक झुका लेते थे। तपश्चर्या के रसायन ने मानो पुराने अग्नि शर्मा में एक नया ही पुरुष प्रगट कर दिया है ऐसा लोगों को लगने लगा।

बिड्रूप अग्निशर्मा उग्र तप के प्रताप से लोगों का वन्दनीय हो गया। उसकी आंख, मुंह अथवा मस्तक की बाह्म आकृति अब नगण्य बन गई। भक्तों को तो यह तापस तप के तेज से दीपता कोई देवदूत जैसा ही लगता था। ताप जिस प्रकार मल और दुर्गन्ध को शोषण कर लेता है, वैसे ही तप भी विकृति का शोषण करने में समर्थ होता है, यह अग्निशर्मा ने सिद्ध कर बताया।

आर्जव कोडिन्य जैसे कुलपति भी अपने आश्रम में अग्निशर्मा जैसे तपस्वी को पाकर अपने को गौरवान्वित मानते थे। दो दो चार चार दिन तो ठीक, परन्तु सप्ताह और पखवाड़े का एक साथ उपवास खींच लेना, मात्र

जौ अथवा चावल के एक दाने पर सारा दिवस बिता देना, चाहे जैसी शीतोष्णता हो, मात्र दर्भ की पतली और छोटी शैया वेश पर हाथ का तकिया बना पड़ा रहना, आदि तो अग्निशर्मा के लिए सामान्य सी बात थी। तपस्वी अग्निशर्मा को आता देख तपोवनवासी भी दो हाथ जोड़ खड़े रह जाते थे।

उपवास करते करते, तीव्र ताप सहते सहते इस अग्निशर्मा के मन में कैसा मंथन मच रहा होगा? कोई भी साधना हेतु रहित नहीं होती है। ऐसी कठोर साधना के बल पर शर्मा कौन सी सिद्धि प्राप्त करना चाहता है? यही चर्चा सर्वत्र रहती थी।

अनंत शाति और अपार अवकाश के अवसर में शर्मा कैसे चिंतन में गहरा उतर जाता होगा? तप के साथ सम्यक् दर्शन-निर्मल दृष्टि न हो तो ऐसी साधना आगे जाकर मनुष्य को उलझन में पटक देती है इतना ही नहीं मार्गभ्रष्ट तक भी कर देती है। परन्तु अग्निशर्मा को ऐसी निर्मल-दृष्टि कौन दे? यद्यपि आचार्य आर्जव कौडिन्य उनके पास जो कुछ भी था उसे अपने प्रिय शिष्यों के देने में जरा भी संकोच नहीं करते थे, परन्तु अभी तक उन्हें भी तो पूर्ण निर्मल दृष्टि प्राप्त नहीं हुई थी।

अग्निशर्मा अपने पूर्वजीवन को एकदम ही भूल गया होगा? कभी उद्धत और अविनासी लोगों के झुंड उसके पीछे पीछे फिरते और अकारण उसे सताते-चिढ़ाते भी थे, क्या वह सब इसे स्मरण नहीं होता होगा? ऐसे समय में इसके अंतर में निष्क्रिय क्रोध अथवा क्षोभ की भावनाऐं क्या उभरती नहीं होगी? और उस गुणसेन युवराज की निर्दय क्रीड़ावाला सारा का सारा प्रकरण क्या अग्निशर्मा ने अपने जीवन में से सर्वथा ही मिटा दिया होगा? मिटा दिया होने पर भी उसकी खूब गहरी कालिमा क्या वहाँ रहने ही नहीं पाई होगी? अग्निशर्मा जितना तपस्वी था उतना वह क्षमाश्रमण नहीं था। क्षमा और शांति की साधना अभी उससे अजानी थी। समय अनेक बातें भुला अवश्य ही देता है और गुणसेन भी इसीलिए बहुत कुछ विस्मृति के पैंदे में जा बैठा होगा। बहुत से क्षत्रियपुत्र-श्रेष्ठीपुत्र और ब्राह्मण उस आश्रम में आते और तपस्वियों के दर्शन से अपने को कृतार्थ मानते थे। वसंतपुर नगर का यह तपोवन एक गौरव था।

एक दिन राजकुंवर जैसा दीखता एक युवक वसंतपुर में से अकस्मात उस तपोवन में आ पहुंचा। वह कुछ थका हुआ दीख रहा था। उसके साथी पीछे रह गए थे। आश्रम से वह एकदम अजान था। मात्र अश्व को दौड़ाता हुआ वह भूल से ही उधर आ निकला था।

तपोवन की शांति और सादगी का ऐश्वर्य देखकर वह दिग्मूढ़ हो गया। इस बसंतपुर में आने के पूर्व वह अनेक देशों में घूमा हुआ था। परन्तु तपोवन और तपस्वियों के दर्शन का सौभाग्य तो उसको आज पहली बार यहां मिला था। एक वृक्ष के नीचे वह किंचित विश्राम लेने को बैठ गया। इतने में कितने ही तपस्वी वहां पहुंचे और उधर कुमार के पीछे रहे हुए साथी भी वहां पहुंच गए।

शनैः शनैः कुलपति तक यह बात पहुंची। वसंतपुर जिस राज्य की सीमा में आप शांति से निश्चिंतता से आश्रम बांधकर रह रहे है उस राज्य के रक्षक राजा के निकट का कोई सगा-स्नेही तपोवन में आ गया है यह जानकर उसके स्वागत के लिये कुलपति स्वतः उसके पास पहुंचे। कुमार ने भी श्रद्धा से उन्हें तब बंदन किया।

कुलपति कहने लगे, इस संगपरितोष नामा तपोवन की बात तो आप जानते ही होंगे। यहां मात्र तपस्वी ही रहते हैं। तप के प्रभाव से यहां पशुपक्षी भी अपना स्वाभाविक वैरभाव तक मूल जाते हैं। करूणामूर्ति जैसे कुलपति के ये वचन सुनकर राजकुमार को ऐसा लगा कि माने वह किसी अलग ही दुनियाँ में ही पहुँच गया हो।

राजकुमार ने कुलपति की बात के सिलसिले में यह स्वीकार किया कि वह इस आश्रम में पहली ही बार आया है इतना ही नहीं अपितु उसका नाम भी अब ही उसने सुना है। वसंतपुर का वह एक अतिथि है यह भी उसने सूचित कर दिया।

वसंतपुर के राजा को कोई उत्तराधिकारी नहीं था यह तो कुलपति को मालूम था। उनके एक मात्र पुत्री थी। राजकुमार का वेश और हाथ में बंधे मदनफल को देखकर उन्होंने अनुमान लगाया कि-

हो न हो यह राजा का जामाता ही होना चाहिये।

उनका अनुमान सत्य था इसका प्रमाण भी तुरत ही उन्हें मिल गया। कुमार जो भी हो, पर क्षत्रियपुत्र है और अकस्मात ही इधर आ पहुंचा है, इतना मात्र ही कुलपति के लिए पर्याप्त था। उन्हें उससे अपना कोई स्वार्थ साधना नहीं था।

थोड़े ही समय के बाद कुलपति के साथ फिरते फिरते और तपस्वियों के दर्शन और उनका परिचय प्राप्त करते करते दोनों ही अग्निशर्मा के पास पहुंचे।

कुलपति ही तब कहने लगे ये हमारे महान् तपस्वी पुरुष हैं। इनका नाम अग्निशर्मा है।

अग्निशर्मा को दूर से ही देखकर गुणसेन के अंतर में एक गहरा धक्का लगा। सब तपस्वियों को दो हाथ जोड़कर नमस्कार करनेवाले गुणसेन ने यहां अग्निशर्मा को भक्तिपूर्वक नमस्कार तो किया ही परन्तु अपने कूतूहल का स्मरण आने से उसके मुख पर पूरी पूरी ग्लानि भी छा गई।

कुलपति ने आगे कहा : इस तपस्वी की केटि में रखा जा सके ऐसा कोई भी पुरुष आज मेरी दृष्टि में नहीं है। इनको यहां आए अधिक समय नहीं हुआ है फिर भी इसी थोड़े से समय में इनकी सरल-ज्ञात प्रकृति ने और सब से अधिक इनके देहदमन की उग्रता ने हम सब को मंत्रमुग्ध कर दिया है।

अग्निशर्मा तो सभी हजारों आम्रवृक्षों की गहरी घटा में ध्यानस्थ बैठे थे। आचार्य कौडिन्य का कंठस्वर सुनकर उन्होंने आंखें खोली और आगन्तुकों की ओर देखा। पहली दृष्टि उनकी राजकुमार पर ही पड़ी। कुमार ने भी विनम्र करुणाझरती आंख में से बहती यह दिव्यता जीवन में पहली बार ही देखी थी।

अग्निशर्मा ने कुमार को तुरन्त ही पहचान लिया। स्मृति बहुत पुरानी भी नहीं हो गई थी। वह तो ताजी ही थी। निश्चय करने में अवश्य ही कुछ देर लगी परन्तु क्षत्रियकुमार अपना परिचित गुणसेन ही है इस विषय में उन्हें जरा भी शंका नहीं रही।

गुणसेन ने उन पर जो अत्याचार किए थे उनकी स्मृति विच्छु के डंक के समान इस परम तपस्वी के अंतर में क्षण भर व्यथा उत्पन्न कर गई परन्तु उसने तुरत ही अपनी संक्षुब्ध वृत्ति को अंतर्मुख कर झुका दी।

कुछ ही खुलते उनके होठों में से तब इस प्रकार के मृदु शब्द निकले। महाराजा गुणसेन आपका मेरे पर कम उपकार नहीं है। आपके प्रताप से ही मुझे तपश्चर्या की यह राह मिली है।

गुणसेन ने समझा कि मेरे अत्याचारों को भी इस तपस्वी उपकार रूप कहता मानता है। परन्तु इससे अत्याचारों की क्रूरता तो मिट नहीं सकती है। तपस्वी यह बात भूल नहीं सके हैं और वस्तुतः अपना अपमान-अपनी परिपूर्ण अवगणना कौन मानव भूल सकता है? ।

गुणसेन के मन में पश्चाताप की चिनगारी प्रगट भी हुई परन्तु वह आग भस्माच्छान्दित थी। गुणसेन के अतिरिक्त दूसरों को यह पश्चाताप की वेदना अभी समझ में आने जैसी नहीं थी।

एक ओर गुणसेन अपने भूतकाल के अत्याचारों का स्मरण करते हुए अंदर ही अंदर जल रहा था तो दूसरी ओर अग्निशर्मा अपनी भूतकाल की अवगणना का स्मरण करते हुए भारी क्षोभ अनुभव कर रहा था। गुणसेन के पश्चाताप की भांति ही यह संक्षोभ भी आस-पास के स्वजनों से अगम्य था। दोनों अपने-अपने मनो मंथन को शमित करने का यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे थे।

क्रमशः

संकलन——

अभूतपूर्व ईमानदारी

अमेरिकन पर्यटक भ्रमण के लिये यूरोप की यात्रा पर गया। जिसके पास बहुकीमती कैमरा था। वह अपने कैमरे से पर्यटन स्थलों की फोटुऐं बराबर खेंचता रहता था। यह इनका चाव था।

यूरोप से भ्रमण करता हुआ अमेरिकन पर्यटक पेरिस में अपने एक मित्र के यहां पहुंचा और पेरिस के दर्शनीय स्थलों, पर्यंटन स्थलों, रमणिक स्थलों आदि की जमकर फोटोग्राफी की। इस पर्यटक ने अपने भ्रमण के दौरान मित्र एवं उसके परिवार के साथ कुछ अपनी अपने स्वचालित कैमरे से फोटुऐं खिंची।

पेरिस से घूमता हुआ इंग्लैण्ड पहुंच गया। इंग्लैण्ड में भी पर्यटन स्थलों का सफर करते हुए कई फोटुऐं खिंची। फोटुऐं खिंचने के बाद टैक्सी में बैठकर जिस होटल में ठहरा हुआ था वहां लौट आया लेकिन कैमरा टैक्सी में भूल गया। टैक्सी इसे होटल में उतारकर चलती बनी।

टैक्सी ड्राईवर जैसे ही अपने घर पहुंचा और टैक्सी संभाली तो उसे पर्यटक यात्री का कैमरा मिला। कैमरे को देखकर वह उसे पर्यटक को लौटाने होटल पर पहुंचा तो मालूम हुआ कि वह तो हवाई जहाज पकड़ कर अपने स्वदेश अमेरिका लौट गया है। टैक्सी ड्राईवर बड़ा ही हताश हो गया।

टैक्सी ड्राईवर कैमरा लेकर फोटोग्राफर के पास गया। उसमें खिंची रील को धुलवाई और उसके सभी फोटो बनाये। इन सभी फोटो को अत्यन्त ही बारिकी से देखा तो उसमें एक कार के पास कुछ लोगों को खड़े देखा इस फोटो में कार के नम्बर भी धुंधले दिखाई दे रहे थे। इसने कार की पहचान के लिये कार के नंबरों का बड़ा एलार्ज करवाया और नंबरों की पहचान करने के बाद कार के मालिक के पास पहुंचा और अमेरिकन पर्यटक के बारे में जानकारी चाही। जब इसे पर्यटक का पता लगा तो उसका कैमरा एवं उससे खिंचे सभी फोटो उन तक स्वयं के खर्चे में पहुंच कर अभूतपूर्व ईमानदारी का परिचय दिया।

भूरचन्द जैन

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2247 6874, Resi: 2246 7707

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2236-8523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

S P M L

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor. South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO. 8 TITTHAYARA November 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225